

Applied Geography (व्यावहारिक भूगोल)

वर्तमान विश्व में उद्योग तथा कृषि में मशीनीकरण की उत्तरोत्तर प्रगति के कारण तथा जटिल होते जीवन एवं लगातार बढ़ती जा रही सामाजिक व आर्थिक समस्याओं के स्थान पर जीवन को सरल बनाने एवं समस्याओं को सुलभ ज्ञान में व्यावहारिक भूगोलवेत्ता का स्थान निश्चय ही महत्वपूर्ण है। इस विशिष्टीकरण की शताब्दी में भूगोलवेत्ता, खासकर व्यावहारिक भूगोलवेत्ता का कार्य उल्लेखनीय है। यही कारण है कि आज विश्व स्तर पर व्यावहारिक भूगोल को विकसित करने के प्रयास जारी हैं।

इस व्यावहारिक भूगोल शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 20वीं सदी के आरंभ में ब्रिटेन में हर्बर्टसन प्रहोदय ने किया। इनके अनुसार व्यावहारिक भूगोल के कार्य इतने विविध एवं महत्वपूर्ण हैं कि प्रायः प्रत्येक राजनीतिज्ञ, युद्धनीतिज्ञ, लोकसेवक, अभियंता तथा उपनिवेशी शासकों को इसमें प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है किंतु हर्बर्टसन के पहले स्ट्रॉबो, रिटर तथा रैजेल जैसे प्राचीन भूगोलवेत्ताओं के कार्य भी विशेष व्यावहारिक महत्व के रहे हैं।

यद्यपि भूगोल आज एक वैज्ञानिक रूप ले चुका है, किंतु गरिष्ठ और उग्रशास्त्र की तरह भूगोल के व्यावहारिक पक्ष का विकास प्राचीन काल में नहीं किया गया, इसलिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भूगोल के क्षेत्र में जब क्रान्तिकारी परिवर्तन आ रहा था तब इसके पारंपरिक विचारधाराओं में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गयी। इस संदर्भ में अमेरिकी भूगोलवेत्ता पीटर हार्स के कार्य उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने अपने शोध-प्रपत्र "Application of Megageographical concept" में यह कहा कि भूगोल के नये शोध-प्राविधियाँ तथा नूतन विषय-सामग्री के कारण इसके उद्घाटन में व्यापक परिवर्तन आया है। इन्होंने इसे Megageography का नाम दिया है। यह भूगोल का वह अंग है जिसका अध्ययन क्षेत्र पारंपरिक भूगोल के सीमा से परे है। इसका केंद्र बिंदु समूह व्यवहार है, जो व्यावहारिक भूगोल का एक उत्तम व्यावहारिक रूप ~~भूगोल का रूप~~ है।

वस्तुतः किसी समूह समाज के विकास में भौगोलिक ज्ञान का कार्यान्वयन ही व्यावहारिक भूगोल है। इसका आधुनिक स्वरूप हारम्प प्रहोदय ने दिया है, जिसके कारण कई विद्वान इस शाखा को द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम सत्र से विकसित विज्ञान की एक शाखा मानते हैं।

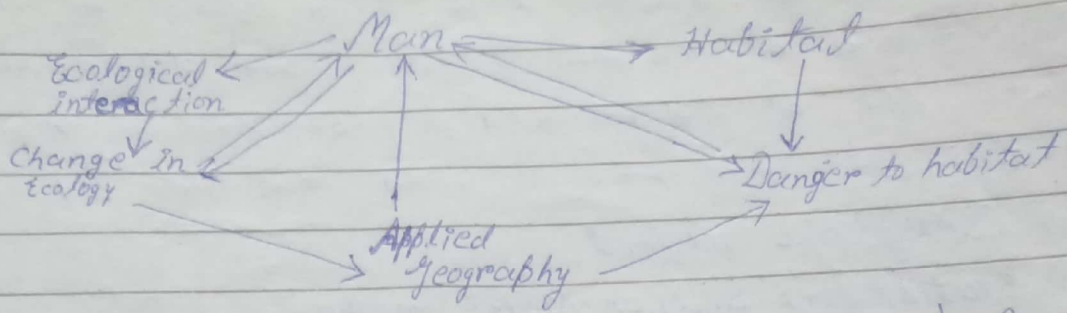
स्टाम्प महोदय के अनुसार भूगोल में सैद्धांतिक व्याख्या की जगह व्यावहारिक व्याख्या न्यायोचित है। उनके इस दृष्टिकोण के आधार पर ही उनके नेतृत्व में ब्रिटेन के एक गाँव का भू-सर्वेक्षण किया गया जिसके बाद उन्होंने अपनी पुस्तक *The Land of Britain: Its Physical Features - Use & Misuse* नाम से लिखा जिससे विश्व को व्यावहारिक भूगोल की महत्ता की जानकारी मिली। स्टाम्प के अनुसार व्यावहारिक भूगोल में भूगोल की उपयोग एवं व्यवहार का ही अध्ययन होना चाहिए। इस संदर्भ में उनकी पुस्तकों के आधार पर ही उपनिवेशी देशों के भूगोलवेत्ताओं ने कार्य करना आरंभ किया। भारत में इसी समय D.C. Chatterjee के नेतृत्व में कलकत्ता में National Atlas Organisation की स्थापना की गयी तथा उन्हीं के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल का Geodetic (Diacenetic) Survey करवाया गया।

इससे केवल यह नहीं समझा जा सकता है कि भू-उपयोग सर्वेक्षण ही व्यावहारिक भूगोल है बल्कि इसका क्षेत्र काफी विस्तृत है।

जॉनसन दूसरे विद्वान थे, जिन्होंने व्यावहारिक भूगोल की महत्ता को स्वीकार किया एवं उसकी वकालत की इनके अनुसार व्यावहारिक भूगोल का अध्ययन स्थानिक, पारिस्थितिकी तथा क्षेत्रीय (Spatial, Ecological & Regional) संदर्भ में करना ही उचित है। स्थानिक संदर्भ में अध्ययन कृषि भूमि उपयोग, शहरी समस्या एवं सुझाव तथा जल से संबंधित कार्यों में बड़ी सहायता मिलती है। पर्यावरण संतुलन के संदर्भ में इसकी महत्ता को जानसन ने स्वीकारा है। क्षेत्रीय नियोजन तथा क्षेत्रीय विकास में भी व्यावहारिक भूगोल की ही एक व्यापक महती आवश्यकता है क्योंकि क्षेत्रीय नियोजन व्यावहारिक भूगोल का ही एक व्यावहारिक रूप है। शहरी नियोजन जैसा कार्य तो मात्र एक भूगोलवेत्ता द्वारा ही भू-माँति संपन्न होना संभव है। और यह शहरी नियोजन भी व्यावहारिक भूगोल का भी एक उत्तम उदाहरण है।

इस तरह स्पष्ट है कि आज समाज में व्यावहारिक भूगोल तथा भूगोलवेत्ता अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं।

हैंगर की तीसरे व्यक्ति थे, जिन्होंने व्यावहारिक भूगोल की महत्ता को स्वीकार कर उसे एक माँडक के की सहायता से समझाया है। जो अज्ञोक्त्र है -



भूगोल से संबंधित अंतरराष्ट्रीय संस्था ने प्रौद्योगिकीय भूगोल की आवश्यकता को निम्न 10 क्षेत्रों के अध्ययन के लिए उपयोगी माना है —

- (i) भू-उपयोग आकलन का नियोजन,
- (ii) जनसंख्या संसाधन का आकलन एवं नियोजन,
- (iii) शहरी समस्याओं का समाधान,
- (iv) परिवहन - नियोजन,
- (v) समेकित क्षेत्र विन्यास,
- (vi) प्राकृतिक आपदा मूल्यांकन,
- (vii) क्षेत्रीकरण नियोजन में सहायक,
- (viii) जल संसाधन का आकलन एवं नियोजन
- (ix) (तराई) मूल्यांकन तथा सौम्याकृति मूल्यांकन
- (x) भूगोल एवं अन्य विषयों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य।

इस तरह उपर्युक्त संस्था एवं कई विद्वानों ने मिलकर व्यावहारिक भूगोल के क्षेत्र एवं विषय-वस्तु को स्पष्ट किया है। इस तरह इन विषय-वस्तु का आकलन एवं नियोजन क्रिया चार अवस्थाओं में संपन्न होता है।

- (1) Collection of data / Generation of data.
- (2) Assesment of data / Scientific treatment of data / Analysis of data.
- (3) Interpretation of data -
- (4) Solution for problems.

अर्थात् सर्वप्रथम आज प्राथमिक आँकड़ों का निम्नलिखित **Sampling** तथा **Sensor method** के जरिये प्राप्त किया जा रहा है। फिर उस आँकड़े का आकलन या वैज्ञानिक तरीके से उसकी जाँच की जाती है। तत्पश्चात् उस संबंधित आँकड़े के बारे में व्याख्या मुख्य रूप से **Statistical** या फिर **Model** के रूप में व्यक्त किया जाता है, और अंततः संबंधित आँकड़े से संबंधित समस्याओं का समाधान सुझाया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि आज आँकड़ों को प्राप्त कर उनकी वैज्ञानिक जाँच की जाने लगी है जिससे उनमें वास्तविकता के अधिक निकट होने की संभावना रहती है। इस प्रकार से प्राप्त तथ्य या सिद्धांत को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जाता है।

- (1) Cartographic method,
- (2) Statistical and/or Model method,
- (3) Survey Report, and
- (4) Sophisticated method like satellite, Computer or remote sensing.

इस तरह व्यावहारिक भूगोल का संपूर्ण कार्य एवं इसका आँकलन व नियोजन विधि तथा इसके प्रदर्शन की आँकड़ों पर आधारित होते हैं। एवं वर्तमान तथ्य तकनीक के यंत्रों एवं साधनों के सहारे जाँच कर प्रदर्शित किये जाते हैं। इसलिए उनके परिणाम वास्तविकता के अधिक निकट होने को वाध्य होते हैं।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि व्यावहारिक भूगोल न केवल वर्तमान की आवश्यकता है, बल्कि भविष्य के लिए आवश्यक, एवं नियोजन संदर्भ से भी आवश्यक है, इसलिए इस व्यावहारिक भूगोल को और अधिक विकसित करने की आवश्यकता है ताकि यह समाज में और अधिक मानव जीवन के लिए सहायक साबित हो सके।

